

classmate
Date _____
Page _____

दो बेलों की कथा

प्रश्न - अभ्यास

(1) कॉजीहॉस में कैद पशुओं की हालिरी क्यों ली जाती होगी ?

-> कॉजीहॉस में कैद पशुओं की हालिरी निम्नलिखित कारणों से ली जाती होगी -

(i) देखा जाता होगा कि कोई पशु किसी कारण से भ्रम ली नहीं गए।

(ii) किसी पशु की मृत्यु ली नहीं हो गई।

(2) छोटी बच्ची को बेलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ गया।

-> गया और उसके परिवार के द्वारा बेली से कठोर कार्य सम्पादित करवाए जाते थे। और प्रताड़ित भी किया जाता था वैसे ही भैंरी की भैली के साथ उसकी सौतेली माँ का व्यवहार था। दोनों की सामान स्थिति होने के कारण छोटी बच्ची

और बेल में आत्मीयता स्थापित हो गई थी। इसीलिए छोटी बच्ची को बेलों के प्रति प्रेम उमड़ गया।

(3) कहानी में बेलों के माध्यम से कौन-कौन सी नीति - विषयक मूल्य उभर कर आए हैं।

→ कहानी में निम्नलिखित नीति - विषय मूल्य उभर कर आए हैं।

(i) संवत्सरा के प्रति के लिए अंतीम समय तक प्रयास करना चाहिए।

(ii) स्त्री को हमेशा प्रतिष्ठा देनी चाहिए।

(iii) मैत्री - धर्म का पालन पूर्ण निष्ठा से करनी चाहिए।

(iv) स्नेह वह तत्व है जिसके बल पर मानव तो क्या मानवतर पर विषय प्राप्त किया जा सकता है।

(v) एकता ही बल है। इत्यादि।

- ④ प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने गन्धे की कीन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मुख्य' का प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

→ 'गन्धे' का रूढ़ अर्थ 'मुख्य' है जिसका परित्याग करते हुए प्रेमचंद ने 'गन्धे' के स्वभावगत संन्यासी के गुणों को तुलना की है। साम्प्रदायिकों की प्रकृति के समान ही 'गन्धे' की प्रकृति को बताया है। शीखापन, सातगी, सहिष्णुता आदि, संन्यासी के सभी गुण में मजबूत हैं।

- (b) किन छटनाओं से पता चलता है कि दीरा और मौती में गहरी दोस्ती थी?

→ निम्नलिखित आधारी पर कह सकते हैं कि दीरा और मौती में गहरी दोस्ती थी।

- (i) दोनों एक-दूसरे की मूल भाषा को समझकर विचार-निनिमग्न कहे थे।

(ii) एक-दूसरे को चार-चूटकर थकान भिठाते थे।

(iii) कार्य- सम्पादन में अधिकारिक लेख स्वयं के कंघी पर लेने का प्रयास करते थे।

(iv) वियतिकाल में एक-दूसरे का सहायक सिद्ध होते थे।

‘लेकिन औरत आल पर झींग चलना मना है यह भूल जाते हैं।’ - हीरा के वृत्त कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट की जाए।

→ हीरा के उपरोक्त कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के समावर्ती दृष्टिकोण स्पष्ट होते हैं। प्रेमचंद उक्त कथन के माध्यम से कहना चाहते हैं कि समाज में स्त्री अर्द्ध और अर्द्ध के पात्र होते हैं। आल, दुत पर कदापि किसी भी स्त्री स्त्रियों में अत्यंत नहीं होना चाहिए।

(7) किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों की कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है।

→ किसान जीवन समाज में किसान और पशुओं के बीच अन्याय - न्याय संबंध होता है जहाँ पशु अमम भोजन और उचित रख रखाव

के किसान पर अग्रिम होने हैं तो कही दुसरी और विभिन्न
कृषि-कार्य के सम्पादन के लिए और विभिन्न दैनिक
निर्भर होते हैं।

- 3) 'इतना तो हो ही गया कि नौ वंस प्रणियों की
जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे -
-मौती के & इस कथन के अलोक में उसकी
विशेषताएं बताइए।

- > मौती के उक्त कथन से उसकी निम्नलिखित
विशेषताएं स्पष्ट होती हैं -

1) वह पशुपकारी प्रकृति का है।

2) मौती आर्थिक सीच का प्रणी है।

3) आशय स्पष्ट किये।

- 4) आवश्यक ही उनमें कौतुं ऐसी अगुप्त शक्ति थी,
जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला
मनुष्य वंचित है।

- > मौली में मौजूद एक ऐसी आन्तरिक शक्ति
जो मूक भाषा और भाव की समझ है।
सर्व श्रेष्ठ विवेकी कहलाने वाले मानव

इस प्रकार की शक्ति से वंचित हैं।

ब) जैलों के पैठ की मदद एक शैली मात्र से शांत नहीं हो सकती है। हीरा और मोती के साथ गया के घर वदुर्व्यवहार होता था जिससे वे स्नेह के भुजे हो गये थे। उस छोटी बच्ची के द्वारा उन शैलियों के माध्यम से उन्हें स्नेह प्राप्त हो रहा था जिससे उनकी तृप्त हो रही थी।

~~Set 1, 2, 3, 4~~
2/4